5 july bb full page FINAL_Layout 1 04-07-2024 02:09 PM Page 1

haribhoomi.com

हरिभूमि बालभूमि

शुक्रवार
5 जुलाई 2024

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

स्पेशल: वर्ल्ड चॉकलेट-डे, 7 जुलाई

यमी चॉकलेट बड़ी टेस्टी है कहानी

बच्चों, चॉकलेट खाने में तो तुम्हें बहुत मजा आता होगा, है ना! क्या तुम जानते हो, इसको सबसे पहले कहां, कब और कैसे बनाया गया था? नहीं पता तो कोई बात नहीं। वर्ल्ड चॉकलेट-डे के अवसर पर हम तुम्हें इन सबके बारे में यहां बता रहे हैं। साथ ही दुनिया की सबसे बड़ी चॉकलेट और चॉकलेट म्यूजियम के बारे में भी जानो।

रोचक जानकारी / शिखर चंद जैन

चॉकलेट खाना तो हर किसी को पसंद होता है। बच्चे तो इसे खूब मजे लेकर खाते हैं। चॉकलेट खाने में जितनी यमी होती है, उतनी ही दिलचस्प इससे जुड़ी बातें भी हैं। तो जानो चॉकलेट से जुड़ी कुछ रोचक बातें-

अमेरिका में हुई शुरुआत

चॉकलेट बनाने की शुरुआत अमेरिका से मानी जाती है। शुरुआती दौर में यहां के लोग चॉकलेट निर्माण में यूज होने वाले कोकोआ-सीड्स को 'गॉड गिफ्ट' मानते थे। वे इसे एक तीखे एनर्जी ड्रिंक की तरह मसालों, कॉर्न सूप आदि के साथ इस्तेमाल करते थे। बीसवीं सदी तक आते-आते अमेरिकी सैनिक युद्ध के मैदान में फास्ट फूड की तरह इसका सेवन करने लगे।

करेंसी के रूप में कोकोआ बींस

बच्चों, तुम्हें जानकर अचरज होगा कि चॉकलेट बनाने के लिए जिन कोकोआ-बींस का इस्तेमाल किया जाता है, इन बींस को प्राचीन माया सभ्यता के लोग करेंसी (मुद्रा यानी रुपए-पैसे के तौर पर) के रूप में इस्तेमाल करते थे। कहते हैं, उन दिनों इसकी कीमत सोने से भी ज्यादा हुआ करती थी। इसका कारण यह था कि कोकोआ की खेती पर प्रतिबंध था और यह आसानी से उपलब्ध नहीं होता था।

ऐसे बनती है चॉकलेट

चॉकलेट, कोकोआ बींस से बनती है। इसकी एक बीन यानी फली में 25 से 50 तक बीज होते हैं। चॉकलेट बनाने के लिए इन बीजों और फली के सफेद पल्प को लकड़ी के कंटेनर में पांच-सात दिनों के लिए बंद कर देते हैं। फिर बीजों को सुखाकर रोस्ट करते हैं, जिससे इनके छिलके अलग हो जाते हैं। इन बीजों से पेस्ट बनाते हैं। पेस्ट में मौजूद कोकोआ बटर को हाइड्रॉलिक प्रेशर से अलग किया जाता है। बचे हुए पेस्ट में चीनी, मिल्क पाउडर और फ्लेवर मिलाकर चॉकलेट बनाते हैं। यहां यह भी बता दें कि दुनिया भर में उपजने वाले कोकोआ का 66 फीसदी हिस्सा पश्चिमी अफ्रीका में पैदा होता है। अकेले आइवरी कॉस्ट में पूरी दुनिया का 33-34 फीसदी कोकोआ का उत्पादन होता है।

अनोखा चॉकलेट म्यूजियम

बच्चों, न्यूयॉर्क (अमेरिका) में एक चॉकलेट म्यूजियम भी है। उसका नाम है- चॉको स्टोरी। अनोखे तरह के इस म्यूजियम को खोलने का विचार जैक्स टोरेस को आया, जो पेशे से एक चॉकलेट मेकर हैं। म्यूजियम की खास बात यह है कि यहां जितनी भी चीजें बनी हुई हैं, वो सब चॉकलेट की ही बनी हुई हैं। तुम इस म्यूजियम में जिधर भी नजर घुमाओगे, तुम्हें सिर्फ और सिर्फ चॉकलेट ही नजर आएगा। म्यूजियम को देखने आने वाले लोगों को सबसे पहले यहां चॉकलेट खाने की दी जाती है। इसके अलावा यहां चॉकलेट के इतिहास के बारे में भी बताया जाता है। ऐसा एक और म्यूजियम जर्मनी के कोलोन शहर में भी मौजूद है, यहां भी चॉकलेट से जुड़ी रोचक जानकारियां दी जाती हैं।

इंटरेस्टिंग चॉकलेटी फैक्ट्स

फिल्म के लिए बनाई चॉकलेट की नदी: वर्ष 1971 में एक फिल्म 'विली वोनका एंड चॉकलेट फैक्ट्री' की शूटिंग के लिए चॉकलेट की नदी बना दी गई थी। इसके लिए 15 हजार गैलन पानी में चॉकलेट और क्रीम को मिलाया गया था।

चॉकलेट इंटीरियर वाला घर: वर्ष 2013 में बेलारूस के मिंस्क में रहने वाली एलीना क्लीमेंट ने एक ऐसा अनूठा घर बनाया, जिसमें मौजूद हर चीज चॉकलेट से बनी हुई थी। 600 किलो चॉकलेट की मदद से बने इस 20 वर्ग मीटर के कमरे में टेबल-चेयर, ड्रॉअर, फायर प्लेस, फ्लावरपॉट आदि सब कुछ चॉकलेट से ही बनाया गया था। इसे बनाने में ढाई महीने लगे। प्रदर्शन के बाद ये सभी चॉकलेटी सामान दर्शकों-ग्राहकों को चखाए गए।

सबसे बड़ी चॉकलेट: ब्रिटेन की एक चॉकलेट कंपनी ने साल 2011 में अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दुनिया की सबसे बड़ी चॉकलेट का निर्माण किया था। इस चॉकलेट का वजन 5792.50 किलोग्राम था।

चॉकलेट लवर हैं यूरोपियन

यूं तो दुनिया के हर देश में चॉकलेट खाने के शौकीन होते हैं, लेकिन यूरोप के लोग इसको कुछ ज्यादा ही पसंद करते हैं। 'इंटरनेशनल कोको ऑर्गेनाइजेशन' के अनुसार दुनिया की आधी चॉकलेट सिर्फ यूरोपियन खा जाते हैं। इसके मुताबिक एक ब्रिटिश, स्विस या जर्मन नागरिक साल में लगभग 11 किलो चॉकलेट खा लेता है।

दुनिया की सबसे महंगी चॉकलेट

पिछले वर्ष पुर्तगाल के आंबिदुश शहर में आयोजित इंटरनेशनल चॉकलेट फेस्टिवल में दुनिया की अब तक की सबसे महंगी चॉकलेट 'ग्लोरियस' प्रदर्शित की गई। इस चॉकलेट की कीमत 7728 यूरो यानी लगभग 6,20,863 रुपए थी। रिपोर्ट के अनुसार 24 कैरेट गोल्ड प्लेटेड इस चॉकलेट के निर्माण में केसर, सफेद ट्रफल, मेडागास्कर के खास वनीला का यूज किया गया। 'ग्लोरियस' की पैकेजिंग भी बेहद खास थी। इस पर हजारों स्वरोस्की क्रिस्टल और मोती भी लगाए गए थे। *

कहानी / संदीप पांडे 'शिष्य'

तेजस को मैथ का सब्जेक्ट बिल्कुल पसंद नहीं था। मैथ्स के सवालों से वह डरता था। लेकिन मम्मी ने एक दिन कुछ ऐसे टिप्स दिए कि तेजस का मैथ को लेकर डर दूर हो गया।

मेरी प्यारी मम्मी

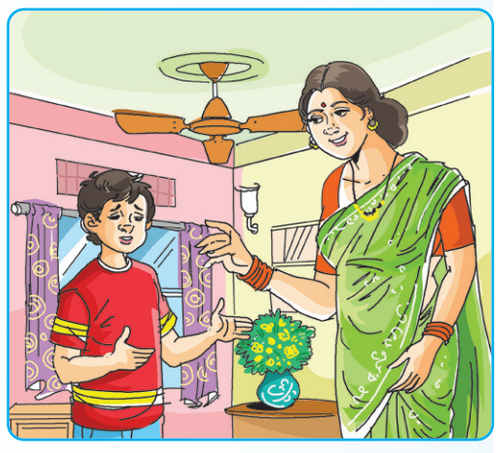

आज तेजस बहुत परेशान था। वह बार-बार पानी पीता और कुछ सोचने लगता। उसे इस तरह परेशान देखकर मम्मी ने पूछा, 'तेजस, इतने परेशान क्यों दिख रहे हो?'

तेजस बोला, 'मम्मी, जब से मैं सेवेंथ क्लास में आया हूं, मैथ्स का सब्जेक्ट कुछ समझ में नहीं आता। इस सब्जेक्ट में मेरा बिल्कुल भी मन नहीं लगता है। मैथ की किताब उठाते ही मैं बुरी तरह घबरा जाता हूं। मेरा मैथ का होमवर्क भी अधूरा रह जाता है। आजकल मुझे रात में सोने के बाद भी मैथ्स के डरावने सपने दिखाई देते हैं।' यह सब बताते हुए तेजस का चेहरा एकदम मुरझा-सा गया।

'बस इतनी सी बात!' मम्मी हौले से मुस्कुराईं और तेजस को समझाते हुए बोलीं, 'बेटा, स्कूल में जो भी सब्जेक्ट पढ़ने होते हैं, उनको लेकर हम सबकी रुचियां अलग-अलग होती हैं। अन्य सब्जेक्ट्स की तरह ही किसी को मैथ्स बहुत पसंद होती है, किसी को नहीं। लेकिन मैथ के सवालों से घबराकर इसे सॉल्व नहीं करना, इससे दूर भागना ठीक नहीं। बच्चों को अपने सिलेबस के सारे सब्जेक्ट्स पर ध्यान देना चाहिए। रुचि से पढ़ना चाहिए।'

तेजस ने पूछा, 'तो फिर मम्मी हमें क्या करना चाहिए?' 'बेटा, यह जो मैथ का सब्जेक्ट है, इसके लिए सबसे जरूरी है प्रैक्टिस। रेग्युलर प्रैक्टिस से मैथ्स के मुश्किल सवाल भी तुम आसानी से हल कर लोगे। अगर आज का टॉपिक या होम-वर्क कल पर टालते रहोगे तो मैथ्स तुम्हें और भी जटिल, बोझिल लगेगी। ये बातें मैथ्स ही नहीं हर, सब्जेक्ट पर लागू होती है।' मम्मी ने तेजस को प्यार से समझाया। तेजस मम्मी की बातें गौर से सुन रहा था। उन्होंने आगे समझाया, 'अब इसका आसान उपाय यह है कि सबसे पहले सरल और जल्दी से हल होने वाले सवाल किया करो। इससे तुम्हें एक खुशी मिलेगी, कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा कि तुमने सवाल हल कर लिया। एक जरूरी बात और सुनो, अगर कोई सवाल नहीं आ रहा हो, तो क्लास में टीचर से पूछने में बिल्कुल भी झिझक मत करो। तुम्हारे जो क्लासमेट्स मैथ्स में तेज हों, उनसे मदद लो। इसमें तुम्हें कभी कोई शर्म महसूस नहीं होनी चाहिए। आखिर वे तुम्हारे दोस्त हैं। अगर बार-बार हल करने पर कोई सवाल हल नहीं हो रहा हो तो कुछ देर कोई दूसरा सब्जेक्ट पढ़ लो फिर मैथ्स के सवाल हल करो, जरूर सफल होगे।'

'मम्मी, आपने तो मुझे काफी अच्छी सलाह दी है।' तेजस खुश होकर बोला। वह अब अपने-आप को बहुत ही हल्का महसूस कर रहा था।

'बेटा, पढ़ाई में एक और बात जान लो, किसी टफ सब्जेक्ट को ईजी बनाने में ग्रुप-स्टडी बहुत काम आती है। तुम्हें भी अपने दोस्तों के साथ ग्रुप-स्टडी करनी चाहिए। तुम अपने दोस्तों को घर बुला लो। मैं तुम लोगों के बढ़िए से नाश्ते-पानी का इंतजाम कर दूंगी। तुम सभी दोस्त नाश्ता भी करना और हंसते-खेलते मैथ्स के सवाल भी हल करना।' मम्मी ने सुझाव दिया।

'सचमुच मम्मी...!' तेजस हंसते हुए बोला।

'हां-हां बेटा, मैं भी जब तुम्हारी उम्र की थी तो यही करती थी। ग्रुप-स्टडी के दौरान हम एक-दूसरे की काफी मदद करते थे। इसमें हमें बहुत मजा आता था, पढ़ाई कभी भी बोझ नहीं लगती थी।' मम्मी ने बताया।

तेजस को मम्मी की सारी बातें समझ आ गई थीं। उसने तय किया कि वह मम्मी की बताई बातों को अमल में लाएगा। वह बहुत खुश था, क्योंकि उसके मन से मैथ्स का डर भाग चुका था। वह मम्मी के गले लगकर बोला, 'आप मेरी प्यारी मम्मी हो!' *

जीके क्विज-111

1. भारतीय क्रिकेट टीम ने किस देश की टीम को हराकर टी-20 वर्ल्ड कप 2024 जीता?
2. अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 600 छक्के लगाने वाले दुनिया के पहले क्रिकेटर कौन बने हैं?
3. हाल में लगातार दूसरी बार भारत के रक्षा मंत्री कौन बने हैं?
4. हर वर्ष विश्व जनसंख्या दिवस कब मनाया जाता है?
5. ओलंपिक खेल कितने वर्षों के अंतराल पर आयोजित किए जाते हैं?
6. भारत के सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला जज कौन थीं?
7. 'भारत कोकिला' के नाम से किन्हें जाना जाता है?
8. दुनिया का सबसे छोटा महासागर कौन सा है?
9. ताज महल किस नदी के तट पर स्थित है?
10. अंतरिक्ष से आसमान का रंग कैसा दिखाई देता है?

बच्चों, जीके क्विज-110 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें **balbhoomihb@gmail.com** पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-110 का उत्तर : 1.ओम बिरला, 2.अजीत डोभाल, 3.दक्षिण कोरिया, 4.तेलंगाना, 5.अल्बर्ट आइंस्टाईन, 6.अमेजन वर्षा वन, 7.महाराष्ट्र, 8.जम्मू कश्मीर, 9.चंद्रमा, 10.सहारा

जीके क्विज-110 का सही उत्तर देने वाले : मिर्जा अमीन बेग-रतनपुर, कबीर-हिसार, शुभम-बिलासपुर, क्षमानिधि-बेमेतरा, पायल-ईमेल से, बी. आकांक्षा-अहमदाबाद, बी.ईशान-अहमदाबाद, नितिन-दुर्ग, सरबजीत-करनाल, अंजलि-कवर्धा, मानवी मधुकर-बिलासपुर, दिव्या-रोहतक, आदित्य-रायपुर

हंसगुल्ले

नव्या : तुम शीशे के सामने बैठकर क्यों पढ़ती हो?
नैंसी : क्योंकि इसके दो फायदे हैं।
नव्या : क्या फायदे हैं?
नैंसी : साथ में पढ़ने के लिए कंपनी मिल जाती है और खुद पर नजर भी रहती है।

-खुशबू, रायपुर

सोनू : पता है, कल रात भर मुझे नींद नहीं आई।
मोनू : क्यों?
सोनू : मैं सपने देखता रहा कि मैं जाग रहा हूं।

-प्रियांश, रोहतक

टीचर : बच्चों, यमुना नदी कहां बहती है?
रोहन : सर, जमीन पर?
टीचर : मैप में बताओ, कहां बहती है?
रोहन : सर, मैप में नदी बहेगी तो मैप गीला नहीं हो जाएगा?

-आर्यन, दुर्ग

कैसे होती है रिमझिम बारिश

इन दिनों हर जगह बारिश हो रही है। बच्चों को तो बारिश बहुत ज्यादा सुहाती है, क्योंकि उन्हें बारिश में भीगने और छप्पाक-छपाई खेलने का मौका मिलता है। लेकिन क्या तुम जानते हो कि बारिश क्यों और कैसे होती है, बारिश की बूंदें गोल क्यों होती हैं? जानो, बारिश से जुड़ी पूरी जानकारी।

नॉलेज-टॉक / अशोक जोशी

समीर आज जैसे ही स्कूल पहुंचा, एकाएक बारिश होने लगी। वह सोचने लगा, कल तक तो गर्मी थी, अचानक बादल कहां से आ गए और बारिश होने लगी? समीर समझ नहीं पा रहा था कि आखिर बारिश होती कैसे है? विज्ञान के पीरियड में जब श्रीवास्तव सर आए तो उसने बड़ी जिज्ञासा से पूछ ही लिया, 'सर, एक बात समझ में नहीं आती कि बारिश होती कैसे है?' श्रीवास्तव सर पहले मुस्कराए फिर बोले, 'समीर, तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। तुम्हारी तरह सभी बच्चों के दिमाग में यही प्रश्न उठ रहा होगा। क्यों बच्चों, क्या कहते हो?' 'हां सर, प्लीज हमें बरसात के बारे में बताएं।' बच्चे एक स्वर में बोले। श्रीवास्तव सर ने बताना शुरू किया, 'बच्चों, वर्षा ऋतु, पूरे वर्ष का वह समय होता है, जब किसी क्षेत्र में अधिकांश औसत वर्षा होती है। पूरे भारत में गर्मी के बाद वर्षा ऋतु की शुरुआत जुलाई में होती है और सितंबर तक चलती है। यह ऐसा मौसम है, जिसका अलग-अलग कारणों से लोगों को इंतजार रहता है।'

'लेकिन सर पानी तो जमीन पर होता है। वह आसमान में कैसे पहुंचता है?' समीर की वर्षा को लेकर जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी। श्रीवास्तव सर आगे बोले, 'तुम्हारा सोचना स्वाभाविक है कि आखिर आसमान में पानी कैसे पहुंचता है? सुनो, जब सूरज की किरणें धरती पर पड़ती हैं तो यह धीरे-धीरे धरती और विभिन्न जल स्रोतों में उपस्थित पानी को गर्म करने लगती हैं। गर्म होने के कारण पानी के कण एक-दूसरे से दूर होने लगते हैं फिर ये कण वाष्प में बदल जाते हैं। यह वाष्प बिल्कुल हल्की होती है, इसलिए हवा के साथ धीरे-धीरे आसमान की ओर चली जाती है।' 'सर, यह भी बताइए ना कि बादल कैसे बनते हैं और इनसे बारिश कैसे होती है?' विवेक ने अगला सवाल किया। 'वेरी गुड, विवेक...!' श्रीवास्तव सर इस प्रश्न पर खुश हुए, उन्होंने बादल बनने और बारिश होने की प्रक्रिया भी समझाई, 'वास्तव में होता यह है कि प्रत्येक 165 मीटर की ऊंचाई पर औसतन 1 डिग्री सेल्सियस तापमान कम होने लगता है, जिसके कारण ऊपर उठने वाली भाप ठंडी होने लगती है। जब जलवाष्प के ये ठंडे छोटे-छोटे कण एक-दूसरे से मिलकर इकट्ठा होते हैं, तो उन्हें हम बादल कहते हैं। चूंकि ये कण बहुत ही हल्के होते हैं, इसलिए ये हवा में आसानी से उड़ने लगते हैं।' श्रीवास्तव सर ने आगे और भी जानकारी दी, 'बच्चों,जब वायुमंडल का तापमान ओसांक (ड्यू प्वॉइंट) से नीचे गिर जाता है, तब बादल के रूप में संघनित जलवाष्प पानी की बूंदों या ओलों के रूप में पृथ्वी पर गिरने लगता है। बादल के रूप में जमा पानी के इन कणों को जमीन पर गिरने के लिए आपस में मिलकर एक क्रिस्टल बनाना पड़ता है। बर्फ का क्रिस्टल बनाने के लिए इन्हें किसी ठोस चीज की आवश्यकता होती है, जो क्रिस्टल के आधार का काम कर सके। बारिश के लिए जंगल की आग, फैक्ट्री या चिमनी आदि से निकलने वाले धुंए से निर्मित छोटे-छोटे कण, रेत के छोटे कण, सूक्ष्मजीव और अंतरिक्ष से आने वाले छोटे उल्कापिंड भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।'

अब तक शांत बैठी संगीता ने भी अपनी गोल-गोल आंखें घुमाकर सवाल किया, 'सर, हमने गौर किया है कि बारिश की जो बूंदें आसमान से टपकती हैं, वे गोल होती हैं, ऐसा क्यों?' 'वाह संगीता! तुम तो बड़े ध्यान से बरसात की बूंदों को देखती हो।' सर हंसे और बोले, 'बच्चों, यह तो तुम जानते ही होगे कि पानी को जिस आकार के बरतन में डाल दें, वह उसके आकार में ही ढल जाता है। जहां तक बारिश के बूंदों की बात है तो 'सरफेस टेंशन' यानी पृष्ठ तनाव की वजह से गोल आकार की हो जाती हैं। ऊंचाई से गिरता हुआ कोई भी द्रव जैसे-जैसे पृथ्वी के पास आता है, वह छोटे-छोटे गोल बूंदों का रूप ले लेता है। गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र में सबसे न्यूनतम आकार गोलाकार होता है। बारिश की बूंदें जब स्वतंत्र होकर गिरती हैं, तो वह न्यूनतम आकार लेने का प्रयास करती हैं। इसलिए गिरती हुई बारिश की बूंदें जैसे-जैसे छोटी होती जाती हैं, गोलकार रूप लेने लगती हैं।' एक पल ठहर कर श्रीवास्तव सर ने बच्चों से पूछा,

'अब सबके समझ में आ गया ना कि बारिश कैसे होती है?'

'हां सर!' सभी बच्चे समवेत स्वर में जोर से बोले। उधर बाहर गड़गड़ाहट के साथ जोरदार बारिश शुरू हो गई थी। बच्चों का मन कर रहा था बाहर निकल कर बारिश में भीगें और छप्पाक-छपाई खेलें। *

कविता
आशा शर्मा

बरखा के संग

काले बादल शोर मचाएं
उमड़-घुमड़ कर हमें बुलाएं
दिल करता सब भूल-भालकर
बरखा के संग नाचे गाएं।
इंद्रधनुष को घर ले आएं
रोलर कोस्टर उसे बनाएं
सतरंगी झूले पर चढ़कर
आसमान में पींग बढ़ाएं।
कागज की कश्ती बनवाएं
ताल-तलैया में तैराएं
कैनवास धरती को कर लें
फिर मनचाहे चित्र बनाएं।
गीली मिट्टी से सन जाएं
घमौरियों पर लेप लगाएं
सावन वाली डोकरिया को
अपने घर का पता बताएं।

अंतर बताओ

बच्चों, यहां एक समान दिखने वाले दो चित्र दिए गए हैं। इनमें 6 अंतर हैं। तुम्हें पांच मिनट में ये सभी अंतर खोजने हैं। तो देर किस बात की, फटाफट सारे अंतर खोजो।

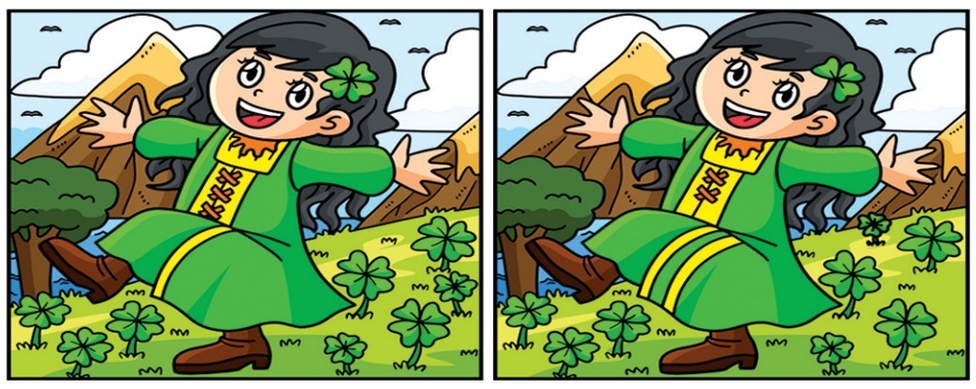

उत्तर: 1.लड़की के बाल में लगे फूल की एक पंखुरी गायब है। 2.लड़की की दाहिनी हथेली के पीछे दिख रहे पहाड़ की आकृति अलग है। 3.लड़की के फ्रॉक के निचले हिस्से पर दो पीली पट्टियां हैं। 4.लड़की के बाएं हाथ के पीछे फूल वाला एक नन्हा पौधा दिख रहा है। 5.लड़की के बाईं तरफ फूल वाला एक पौधा कम है। 6. लड़की के फ्रॉक के ऊपरी हिस्से में एक रिबन कम है।

सही मैचिंग करो

बच्चों, इस चित्र में सोनू (S), मोनू (M) और राजू (R) फिशिंग कर रहे हैं। उनके फिशिंग रॉड के धागे आपस में उलझ गए हैं। तुम चित्र को गौर से देखो और बताओ कि किसने कौन-सी मछली पकड़ी?

उत्तर: S-2, M-3, R-1

गिनकर बताओ

बच्चों, यहां कई सारी बिल्लियों के चित्र दिए गए हैं। तुम गिनकर बताओ कि इस चित्र में कुल कितनी बिल्लियां दिख रही हैं?

उत्तर-12